उषा प्रियंवदा आधुनिक नारीवादी प्रमुख लेखिकाओं में से एक हैं । उनकी माँ का नाम प्रियंवदा था, जो बड़ा ही कवित्वपूर्ण और ध्वनिरंजक था । किंतु उन्होंने अपनी बेटी का छोटा सा और सुरूचिपूर्ण नाम रखा उषा । उषा जी अपने नाम के साथ अपनी माता जी का ही नाम जोड़ती है । विवाह के बाद भी उन्होंने अपने पति का नाम नहीं जोड़ा । उनका जन्म कानपुर में हुआ तथा बचपन भी वहीं बिताया । लेकिन अध्ययन का क्षेत्र इलाहाबाद रहा । विद्यार्थी जीवन में जिन महान हस्तियों ने उन पर प्रभाव डाला, वे थे बच्चन जी, पंत जी, फिराक गोरख़पुरी तथा श्रीपत राव । बच्चन जी का कविता का पाठ, पंत जी के घर की शामें, फिराक साहब का अप्रत्याशित लाड़ और श्रीपत जी का लेखन के लिए प्रोत्साहन उन्हें कायम याद आता । उनकी आरंभिक कहानियाँ 'सारिका', 'कल्पना, 'कहानी', 'कृति' आदि में प्रकाशित हुईं । बाद में तो वह 'धर्मयुग' और 'सारिका' की सम्मानीय लेखिका बन गयी । यदि ऐसी महान हस्तियाँ उन्हें प्रेरणा न देतीं तो वह नये क्षितिज शायद ही छूतीं । उषा जी ने ईलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की । तीन साल दिल्ली के लेडी श्रीराम कॉलेज में अध्यापन करने के बाद फुलब्राइट स्कोलरशिप पर अमेरिका प्रस्थान किया । जहाँ ब्लूमिंगटन, इंडियाना में दो वर्ष पोस्ट डॉक्टरेट अभ्यास किया । आई थीं एक विद्यार्थी के रूप में, एक वर्ष के लिए, पर अब तो पूरी जिन्दगी वहीं बीतेगी । वे अपनी योग्यता के बलबूते पर विस्कांशित विश्वविद्यालय मेडीसन में दक्षिणेशियाई विभाग में प्रोफेसर के रूप में है ।

विद्यार्थीकाल से ही लिखने का आरंभ करनेवाली उषा जी आज तक लेखन प्रक्रिया से जुड़ी हुई हैं । कथा साहित्य में उन्होंने अपने विचारों को प्रभावक रूप से प्रस्तुत किया है । हिन्दी की नारीवादी लेखिका होने के नाते उनकी रचनाओं में नारी की संवेदना को वास्तविक रूप दिया है । उन्होंने नारी की आंतरिक पीड़ा तथा अन्तर्द्वन्द्व को भलीभाँति वास्तविक रूप देने का सफल प्रयत्न किया है । उषा जी के उपन्यासों की नारियाँ कल्पनालोक में विचरण करने वाली परियाँ नहीं हैं, बल्कि ये नारियाँ मनुष्य जगत में रहने वाली हाड़-माँस से बनी हुई है, जिनकी अपनी-अपनी आवश्यकताएँ हैं जो परम्परागत समाज के बन्धनों में बँधकर भी अपना नीजि रास्ता ढूँढ लेती हैं ।

उषा प्रियंवदा के उपन्यास सर्जन के साथ-साथ उनके विदेशी परिवेश के जीवन में

कड़वे-मीठे अनुभवों के कारण उपन्यासों के कथ्य में उतार-चढ़ाव आता दिखाई देता है । उनके 'पचपन खम्भे लाल दीवारें' की सुषमा पारिवारिक सामाजिक जिम्मेदारियों के जाल में फँसी रहती है । उसकी परिस्थिति के लिए उसका परिवार जिम्मेदार है यह जान कर भी वह अपना कर्तव्य समझकर अपने परिवार के लिए अपनी खुशियों की बली चढ़ाती है। 'रूकोगी नहीं राधिका' की राधिका सुषमा की तरह सामाजिक बन्धनों में न बँधकर कभी विदेश तो कभी भारत लौटकर अपनी खुशियों तथा अस्तित्व के लिए भटकती है । नील के साथ जाने का सुषमा का सपना राधिका द्वारा पुरा होता है । 'शेष यात्रा' की अनु का नसीब कोई ओर ही लिखता है, वह राधिका की तरह विदेश से भारत नहीं लौटती है न विद्रोह करती है; सदा मौन रहती है । तलाक पाकर बेसहारा होकर भी वह हिम्मत नहीं हारती; आगे पढ़ती है और अपनी मेहनत के बल पर डॉक्टर बनती है । अपना अस्तित्व वह खूद ढूँढ लेती है तथा जीवन की शेष यात्रा पूरी कर लेती है । 'अंतर्वंशी' की वाना नारी शोषण करने वाले पुरूष वर्ग के शिवेश द्वारा शोषण का शिकार होती है । उसे भरपूर शारीरिक भोग के सिवा ओर कुछ नहीं मिलता । वह पवित्र प्रेम के लिए तरसती है । वह दो बेटों की माँ होने पर भी स्कूल में पढ़ने जाती है, अंग्रेजी सिखने जाती है । कड़ी मेहनत करती है और सफल भी होती है । राधिका और अनु की तरह वह भी अपने अस्तित्व के लिए लड़ती है । संस्कार बद्ध भारतीय नारी की तरह पति की मौत पर रोती-बिलखती है । कालान्तर राहुल के साथ विवाह कर अपने अस्तित्व को पा लेती है । राहुल भी उसे दो बेटों सहित स्वीकार करके प्रेम की उमदा मिशाल बनता है । 'भया कबीर उदास' की लिली पाण्डेय उर्फ यमन कैंसर फ्री होकर भी मनुष्य के जीवन के अंत, मौत के डर को लिए हुए जीती है । वह भी अपने जीवन के अस्तित्व की चिंता में मग्न रहती है । वनमाली को पाकर अपने अस्तित्व को पा लेती है और मृत्यु ही जीवन-यात्रा का अन्त मानकर मौत के डर से सदा मुक्त हो जाती है ।

उषा जी के उपन्यास वक्त के साथ प्रायः अपना रूप एवं रंग बदलते हैं । यह सच है कि उनके सभी उपन्यास मनुष्य की आन्तरिक कुंठाओं को लेकर चलते हैं और मानव मन को झकझोर देते हैं ।

उपन्यास साहित्य नारी की स्थिति के लिए युग-सापेक्ष रहा है । युगीन परिस्थितियों के अनुकूल भारतीय नारी की स्थिति को चित्रित किया गया है । प्रेमचन्द पूर्व के उपन्यासों में नारी का सती रूप, प्रेमचन्द युग के उपन्यास साहित्य में नारी जागरण एवं प्रेमचन्दोत्तर

काल में नारी की विविध समस्याओं का निरूपण किया गया है । स्वातंत्र्योत्तर काल में बदलती हुई स्थिति ने भारतीय नारी के जीवन के महत्वपूर्ण पक्षों को उद्‌घाटित किया है। यथा -

(१) भारतीय नारी की आर्थिक, मानसिक, सामाजिक एवं पारिवारिक स्थिति ।

(२) स्त्री-पुरूषों के बदलते हुए सम्बन्धों का विश्लेषण ।

उषा प्रियंवदा ने युगीन परिवेश के साथ नारी के बदलते हुए रूप को पूर्ण सच्चाई एवं इमानदारी के साथ चित्रित किया है । नारी जीवन की संवेदना को उन्होंने हू-ब-हू चित्रित करके भावकों-पाठकों को नारी के प्रति दृष्टि को बदल दिया है । नारी की बाह्य समस्याओं से उपर उठकर आन्तरिक भाव-जगत की हलचल को प्रकट किया है ।

उषा प्रियंवदा ने अपने उपन्यासों में देशी और विदेशी परिवेशों में स्त्री-पुरूष के बनते-बिगड़ते सम्बन्धों को व्यक्त किया है । उनके 'पचपन खम्भे लाल दीवारें' उपन्यास को छोड़कर अन्य चार उपन्यासों का कथ्य भारतीय एवं अमेरिकी जीवन, संस्कृति एवं सभ्यता की वास्तविकता को लिए हुए है । उनके उपन्यासों के नारी पात्र अक्सर आंतरिक भावजगत से त्रस्त हैं । उनकी नारियाँ अकेलेपन, कुण्ठा और अवसाद से उत्पन्न हताशा, निराशा, घूटन, टूटन एवं संत्रास से उत्पीड़ित हैं । 'पचपन खम्भे लाल दीवारें' की सुषमा कॉलेज की अध्यापिका है । हॉस्टेल की वार्डन है । वह आर्थिक रूप से सुखी है किन्तु उसके जीवनाभाव के कारण अकेलेपन से त्रस्त है । वह नील से प्रेम कर सकती है किन्तु उसे पा नहीं सकती । वह अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को अपने सिर पर लेकर अपनी खुशियों का बलिदान दे देती है । हमारे विचार से सुषमा का उसके परिवार द्वारा शोषण होता है । उषा जी इस उपन्यास के जरिए यह कहना चाहती होंगी कि नारी का हर युग में शोषण हुआ है । वह नारी अनपढ़ और अशिक्षित होंगी इसलिए ही आज तक सहन करती आई है । किंतु आज की नारी शिक्षित एवं समझदार है, आर्थिक रूप से सुखी है, फिर भी वह परिवार एवं संसार द्वारा शोषित है । नारी के बदलते हुए रूप के साथ-साथ उसके शोषण का रूप भी बदल गया है । पारिवारिक सम्बन्धों में प्रायः अर्थ ने अपना साम्राज्य जमा लिया है । प्रेम, आकर्षण अर्थ के तराजू पर तोले जाते हैं । सुषमा के माता-पिता सुषमा के जीवन को बरबाद होता देखकर दुःखी नहीं होते हैं, जितने उसके परिवार की स्थिति को देखकर दुःखी होते हैं । उनको मालूम है कि अगर सुषमा का विवाह हो गया तो कमाने का साधन खतम हो जाएगा, पारिवारिक दशा बिगड़ जाएगी इस डर के

कारण सुषमा के सपनों को साकार नहीं होने देते । वर्तमान युग की नारी भी यह सब देखते हुए सम्बन्धों के खोखलेपन से हताशा और निराशा के प्रवाह में मजबूर होकर बहती है ।

'रूकोगी नहीं राधिका' की राधिका अपने अकेलेपन से मुक्त होने के लिए विदेशी पत्रकार डैन के साथ भाग जाती है, किन्तु उसे विदेश में भी सकुन नहीं मिलता । अकेलापन वहाँ भी उसका साथ नहीं छोड़ता । डैन से अलग होकर वह अकेली हो जाती है । आज की राधिका अपनी शारीरिक एवं मानसिक तृप्ति के लिए अपने परिवार को छोड़ सकती है । विदेशी संस्कृति के आकर्षण के कारण वह डैन, अक्षय और मनीश जैसे पुरूषों के साथ मुक्त सम्बन्ध स्थापित करती है, किन्तु उसमें न डर है या न हिचकिचाहट। स्वतंत्रता एवं अपने अस्तित्व के लिए आपसी संबंधों को भी एक झटके के साथ तोड़ देती है । 'शेष यात्रा' की अनु अकेलेपन से त्रस्त है । सुखी सम्पन्न दाम्पत्य में उसका पति प्रणव उससे दूर भागता रहता है । वह उससे शिकायत करती है कि उसके एक-दो बच्चे हो जाए तो उसके साथ सारा दिन कट जाए । इससे हमें पता चलता है कि अकेलेपन से अनु टूट जाती है । अंत में पति प्रणव से तलाक पाकर अकेलेपन की गर्त में डूब जाती है । नारी को उपर उठाने की कागजी बात पर आज की नारी को यकीन नहीं है । जहाँ पर नारी को सम्मान नहीं मिलता, जहाँ उसकी पूजा नहीं होती वहाँ सत्व, तत्व नहीं रहता। यह जानकर भी उसे मशीन की तरह इस्तेमाल किया जाता है । 'अंतर्वंशी' की वाना का उसके पति शिवेश द्वारा मात्र मशीनी सम्बन्ध है वह उसे मात्र भोग की चीज समजता । कई बार वाना शिवेश के स्पर्श मात्र से काँपने लगती है । आज स्त्री-पुरूष आंतरिक पवित्र सम्बन्धों से ज्यादा स्वार्थलोलूप सम्बन्धों से घिरे हुए हैं ।

उषा प्रियंवदा नारीवादी लेखिका है अतः उनका हृदय नारी की स्वतंत्रता के लिए धड़कता है । उन्होंने नारी-मन की अथाह गहराई में जाकर उसकी उलझनों, कुण्ठाओं, अन्तर्द्वन्द्वों के साथ अत्याधुनिक प्रेम, विवाह और दाम्पत्य जीवन से सम्बन्धित अनेक समस्याओं को अपने विशिष्ट दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है ।

उषा जी के 'पचपन खम्भे लाल दीवारें' की सुषमा अपने परिवार की जिम्मेदारियों के तहत स्वतंत्र होकर भी स्वतंत्र नहीं होती । पारिवारिक बन्धनों को तोड़ नहीं सकती । सुषमा की दमनीय इच्छाओं की तृप्ति 'रूकोगी नहीं राधिका' की राधिका ने पूर्ण की ।

राधिका शुरू से ही स्वतंत्रता की चाह रखती है इसलिए ही तो वह डैन के साथ

विदेश चली जाती है, वहाँ डैन के साथ न बँधकर भारत लौट आती है । पिता द्वारा पारिवारिक जिम्मेदारियों में फिर से बाँधने के प्रयत्न को सफल नहीं होने देती । वह स्वतंत्र विचारों, स्वतंत्र सत्ता की चाह सदैव रखती है ।

उषा जी के उपन्यासों की नायिकाएँ सदैव स्वतंत्रता की चाह लिए हुए हैं । 'रूकोगी नहीं राधिका' की राधिका हो, 'अंतर्वंशी' की वाना हो या 'भया कबीर उदास' की यमन; स्वतंत्रता के साथ-साथ अपने अस्तित्व के लिए भी सदैव जागृत रहती है । उषा जी ने सुषमा दमन का शिकार जितनी हुई है, वे सभी भावनाएँ उनके अन्य उपन्यासों की नायिकाओं के व्यक्तित्व में विद्रोही स्वरूप लेकर उसे पाने के लिए लालायित नज़र आती हैं ।

आज की नारी केवल स्वतंत्रता नहीं चाहती । वह अपने अस्तित्व के लिए भी जागृत है । 'रूकोगी नहीं राधिका' की राधिका अपने अस्तित्व के कारण ही भारत से विदेश और फिर भारत आती जाती रहती है । अंत में वह अपने अस्तित्व स्वरूप मनीश को पा लेती है । तो दूसरी ओर 'शेष यात्रा' का प्रणव अनु को तलाक दे देता है तब अनु के लिए उसके अस्तित्व का सवाल पैदा होता है । वह भारत न लौटकर फिर से पढ़ती है, डॉक्टर बनती है । अंत में उसकी सखी दिव्या के भाई दीपांकर से विवाह करके अपना अस्तित्व पा लेती है । 'अंतर्वंशी' की वाना नारी के विविध रूपों में न बँधकर अपने अस्तित्व की खोज में भटकती है । वह पति शिवेश से बँधकर रहना नहीं चाहती बल्कि शिवेश उसे एक मशीनी स्त्री बनाकर रखना चाहता है, भरपूर भोगता है । इससे वाना परेशान हो जाती है । उसे शिवेश से प्रेम नहीं मिलता, केवल भोग मिलता है । दो बेटों की माँ होने पर भी वह पढ़ने जाती है । शिवेश की मृत्यु के बाद अतीत की पवित्र चाह के रूप में राहुल को पाकर अपना अस्तित्व पा लेती है ।

हरेक देश की पहचान उसके समाज और संस्कृति से होती है । विश्व में भारतीय सामाजिकों का रहन-सहन एवं रीति-रिवाज अन्य देशों के रिवाजों से भिन्न हैं । भारतीय सामाजिक विदेशों में जाते हैं और भारतीयता को छोड़कर विदेशी समाज एवं संस्कृति में हिल-मिल जाने की कोशिश करते हैं । अगर वह हिल-मिल जाते भी हैं तो वे पूर्णतया विदेशी नहीं हो जाते । उषा जी के पाँच उपन्यासों में से चार उपन्यासों की नायिकाएँ विदेशी आकर्षण के कारण विवाहिता होकर विदेश जाती हैं, किन्तु वहाँ के जीवन में अपनों के लिए समय नहीं होता । 'शेष यात्रा' की अनु के लिए प्रणव के पास समय नहीं है । दूसरी

ओर 'अंतर्वंशी' की वाना के लिए शिवेश के पास समय ही समय है, किन्तु स्नेह नहीं है । रूखा-सूखा सम्बन्ध शारीरिक तृप्ति के अलावा ओर कुछ नहीं । 'रूकोगी नहीं राधिका' की राधिका और 'भया कबीर उदास'की यमन विदेशी आकर्षण के कारण विदेश जाती हैं किन्तु वे अतृप्त मानस लेकर भारत लौट आती हैं । 'शेष यात्रा' की अनु और 'अंतर्वंशी' की वाना विदेश से लौटती नहीं । वे दोनों वहाँ पढ़ती हैं और वहाँ के समाज में स्वयं को ढाल लेती हैं ।

भारतीय माता-पिता अपनी बेटियों के लिए विदेश में बसे भारतीय लड़कों से विवाह करना अहोभाग्य समझते हैं । किंतु वहाँ जाकर वह इतनी दयनीयता का सामना करती हैं यह तो अनु और वाना ही जानती हैं । आज के युग में राधिका, अनु, वाना और यमन जैसी रमणियाँ भी हैं जो विदेशी मोह में अभिशप्त जीवन जीने के लिए मजबूर हो जाती हैं ।

आधुनिक युग में सफल दाम्पत्यजीवन की तुलना में दुःखी दाम्पत्य जीवन का कलह देखने को मिलता है । युगीन प्रवाह के साथ नारी का विकास भी हुआ है । वह अपने अधिकारों के लिए लगातार संघर्षरत् है । 'रूकोगी नहीं राधिका' अपने अधिकार छीन जाने से दुःखी होकर विदेश चली जाती है । 'शेष यात्रा'की अनु पति प्रणव पर उसके अधिकार छिन जाने के डर से सिहर उठती है, रोती-बिलखती है । वह प्रणव से अपने अधिकार की भिक्षा माँगती है । 'अंतर्वंशी' की वाना नारी स्वतंत्रता के अधिकारों के लिए लड़ती हुई दिखाई देती है । उषा जी के उपन्यासों में 'रूकोगी नहीं राधिका' के पिता और विमाता विद्या का दाम्पत्य-जीवन शुरू होने से पहले ही टूट जाता है । 'शेष यात्रा' के अनु-प्रणव के सुखी दाम्पत्य जीवन में चन्द्रिका टाँग अड़ाती है । स्त्रियों के शौकिन प्रणव एक के बाद एक स्त्रियों को भोगता-बदलता है । आखिर अनु को तलाक देकर चन्द्रिका के साथ विवाह कर लेता है । अनु और प्रणव के सुखी दाम्पत्य-जीवन का अंत हो जाता है तो दूसरी ओर प्रणव और चन्द्रिका का दाम्पत्य-जीवन भी शुरू होने पर टूट जाता है। 'अंतर्वंशी' की वाना अपने पति शिवेश के साथ सुखी दाम्पत्य जीवन जीती है । दो बेटों के सहित दोनों सुखी दाम्पत्य जीवन की सुवास का अनुभव करते हैं, किन्तु शिवेश का वाना के प्रति मशीनी प्रेम, सेक्स वाना के हृदय को ठेस पहुँचाता है अतः वह राहुल से जुड़ जाती है । शिवेश को जब इस बात का पता चलता है तो वह आत्महत्या कर लेता है अतः यहाँ 'अंतर्वंशी' उपन्यास की वाना और शिवेश के दाम्पत्य जीवन का अंत हो

जाता है । उषा जी के उपन्यासों की स्त्रियाँ अधिकाधिक दुःखी दाम्पत्य-जीवन की कसक में अतृप्ति एवं अभिशप्त जीवन के कारण सुख का अनुभव नहीं करती, बल्कि अन्तरमन से टूटती हुई नजर आती है।

उषा जी ने अपने उपन्यासों में स्त्री-पुरूष के विवाहेत्तर सम्बन्ध और स्त्री-पुरूष के विवाहपूर्व सम्बन्धों का चित्रण किया है । विदेशों में यह सम्बन्ध कोई नई बात नहीं है, किन्तु भारत में इसे अपवित्र सम्बन्ध माना गया है । स्त्री और पुरूषों के विवाहेत्तर सम्बन्धों को वास्तव में देखा जाएँ तो दोनों सम्बन्धों में आन्तरिक गहराई कम होती है, मात्र इसमें शारीरिक आकर्षण रहता है या अतृप्ति । इसे हम आधुनिक युग की सबसे बड़ी समस्या कह सकते हैं । ऐसे सम्बन्धों में पवित्रता कम और अश्लिलता ज्यादा होती है । इसमें त्याग और बलिदान की भावना कम होती है, अपितु इसमें स्वार्थ की भावना विशेष होती है । ऐसे सम्बन्धों में उषा जी के 'रूकोगी नहीं राधिका' की राधिका का विवहित पुरूष डैन के साथ अमेरिका भाग जाना । 'अंतर्वंशी' की वाना का पति शिवेश के होते हुए राहुल से शारीरिक रूप से मिलना । 'शेष यात्रा' का प्रणव विवाहित होकर सुंदर सुशील पत्नी अनु के होते हुए भी अतृप्त वासना को लिए हुए चन्द्रिका नामक लड़की की ओर आकर्षित होना और उससे विवाह कर लेना । 'भया कबीर उदास' की यमन का राघव के पिता शेषेन्द्र से शारीरिक रूप से जुड़े रहना अविवाहिता होकर भी उसका गर्भ धारण करना यह भारतीय समाज एवं संस्कृति के खिलाफ है, किंतु लिली पाण्डेय विदेश जाकर अपना नाम तक बदलवा देती है उससे हम पवित्रता की आशा कैसे रख सकते हैं । उषा जी के पात्र सामाजिक बन्धनों को तोड़कर स्वतंत्र, निर्भय होकर जिन्दगी जीते हैं । इस तरह हम देखते हैं कि उषा जी बोल्डनेस द्वारा नैतिक मूल्यों से टकराकर विद्रोह करती हुई नजर आती है ।

साठोत्तरी महिला लेखन संघर्षोन्मुख रहा है । इनके उपन्यासों में नारी-संघर्ष के विविध रूप दिखाई देते हैं । नारी की विवाह विषयक नई चेतना, नई मानसिकता एवं स्त्री-पुरूष सम्बन्धों में आये बदलाव को नये रूप से चित्रित किया है । उपेक्षित एवं शोषित नारी की वास्तविक स्थिति का यथार्थ चित्रण इस काल के उपन्यासों में अक्सर देखने को मिला है । अभिशप्त नारी की दर्दनाक वेदना को उषा जी ने वाणी दी है । जैसे - सुषमा, राधिका, अनु, वाना और यमन । उषा जी के पाँचों उपन्यासों की मूल समस्या नारी के स्वतंत्र अस्तित्व से सम्बद्ध है ।

उषा जी ने उपन्यासों की तरह कहानियों में भी स्त्री-पुरूष के संबंधों को नये आयाम में देखें हैं । स्त्री-पुरूष का विवाहोत्तर प्रेम सम्बन्ध अथवा विवाहोत्तर पर-पुरूष सम्बन्ध, पति-पत्नी के मधुर सम्बन्ध मे दरार बनकर उभरे हैं । 'मोहबन्ध' की अचला और नीलू 'कितना बड़ा झूठ' की किरन, 'ट्रिप' की नायिका, 'स्वीकृति' की जपा और 'पुनरावृत्ति' का चिरंतन 'चाँद चलता रहा' का कर्नल 'झूठा दर्पण' का यति आदि इसके प्रमाण हैं । कहीं स्त्री-पुरूष अपने-अपने अहं के टकराव के कारण मानसिक यंत्रणा भोगते हुए टूट चुके हैं तो कई विगत अहं को भूलकर समझौता कर लेते हैं । यथा 'दृष्टि दोष' के साम्ब और चन्द्रा । उनकी कहानियों में अकेलेपन और अजनबीपन की भयावहता को बखूबी वास्तविक धरातल पर चित्रित किया है । आज का व्यक्ति अपनों के साथ एवं भरी भीड़ में अकेलेपन और अजनबीपन का एहसास करता है । अतः आज के वर्तमान युग में व्यक्ति, अन्य समस्याओं से लड़ता हुआ नजर आता है, किन्तु अंतरमन को झकझोरने वाले अकेलेपन और अजनबीपन के आगे व्यक्ति बेबस एवं लाचार नजर आता दिखाई देता है। उषा जी ने अकेलेपन और अजनबीपन की समस्या का यथार्थ अंकन किया है । आज का मनुष्य संसार की कोई भी समस्या का सामना और उससे समाधान कर सकता है । किंतु उसके अकेलेपन और अजनबीपन की भयावहता से स्वयं को मुक्त नहीं कर पाता । आज भारतीय सम्बन्धों पर विदेशी सभ्यता का असर हम देख सकते हैं । आज स्त्री या पुरूष किसी से बंधकर रहना नहीं चाहते । अपनी नीजि स्वतंत्रता के लिए, अपने अस्तित्व के लिए सम्बन्धों के मूल्य को गौण समझकर अपनी खुशियों को बटोरने लग जाते हैं । अकेलेपन की भयावहता से स्वयं को मुक्त करने के लिए स्त्री-पुरूष प्रेम का बनावटी मुखौटा पहनकर एक-दूसरे को छलते भी हैं । आज भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य संस्कृति का शीत युद्ध जारी है । भारतीय स्त्री-पुरूष अपनी उब, अकेलेपन की तृप्ति के लिए विदेशियों-सी संस्कृति को लेकर जीने के लिए मजबूर हो जाते हैं । 'छुट्टी का दिन' की माया, 'ट्रिप' और 'नींद' कहानियों की नायिकाएँ, 'मोहबन्ध' की अचला, 'पूर्ति' की तारा, 'टूटे हुए' की टीटी, 'सागर पार का संगीत' की देवयानी आदि अपने-अपने अकेलेपन एवं अजनबीपन को ढ़ोती हैं ।

उषा जी की कहानियों में पति-पत्नी के दाम्पत्य जीवन में पति एवं पत्नी की छटपटाहट नजर आती है । कहानियों के पात्रों के जरिए समाज में रहते पात्रों के बनते-बिगड़ते सम्बन्धों को लेकर उन्होंने भारतीय एवं पाश्चात्य समाज के युगीन परिवेश का

उद्‌घाटन किया है । उनकी कहानियों के अधिकाधिक स्त्री-पात्र सांसारिक बंधनों से मुक्ति चाहते हैं । पति-पत्नी का सम्बन्ध उसे अमानवीय और त्रासदीय लगता है । उनके कई स्त्री एवं पुरूष पात्र भारतीय संस्कृति के तहत समाज की सीमाओं को पार नहीं करते बल्कि कई पात्र सामाजिक बन्धनों की जरा-सी भी परवाह नहीं करते । यथा - 'अकेली राह' की गौरी, 'स्वीकृति' की जपा, 'सागर पार का संगीत' की देवयानी, 'प्रतिध्वनियाँ' की वसु, 'ट्रिप' की नायिका, 'चाँदनी में बर्फ पर' की मेरी मेकलिन उर्फ मीरा, 'दृष्टि दोष' की चन्द्रा, 'कितना बड़ा झूठ' की किरन, 'पुनरावृत्ति' की मधुलिका आदि ।

आज के सामाजिकों में अर्थ के कारण रोजमर्रा के जीवन में छोटे-मोटे खटराग को हम भलिभाँति देखते हैं । 'वापसी' कहानी के हरेक पात्र अर्थाभाव का एहसास करता है। 'दृष्टि दोष' के दो परिवारों में धन का अभाव खलता नहीं है, परन्तु धन के कारण ऊँचा जीवन जीने में वास्तविक जीवन के मर्म को खो देते हैं । 'कच्चे धाग' कहानी में धनाभाव के कारण उम्मीदें केवल उम्मीदें बनकर रह जाती हैं । 'स्वीकृति' की जपा पढ़ी-लिखी नौकरीपेशा होने पर भी वह सबकुछ सहन करने की नियति स्वीकार कर लेती है । इस कहानी के सत्य के लिए पत्नी का सम्बन्ध अर्थ के तराजू पर बना रहता है । 'जिन्दगी और गुलाब के फूल' कहानी का माध्यम भी अर्थाभाव से बदलती जिन्दगियों की यथार्थता को लिए हुए हैं ।

उषा जी की कहानियों में प्रेम की अपेक्षा दैहिक आकर्षण अधिक दिखाई देता है। कहानियों के पात्र वक्त की कमी के कारण भागदौड़ करते हैं तथा आंतरिक प्रेम तथा तृप्ति के लिए सामाजिक सीमाओं को तोड़ देते हैं । आंतरिक तृप्ति के लिए भटकते हुए पात्र ऐसे मकाम को ढूँढने की कोशिश करते हैं, जहाँ परम सुख और शांति हो, किंतु समय के बाद वहाँ से भी उखड़ जाते हैं ।

उषा जी की कहानियों की अधिकतर स्त्रियाँ विवाहपूर्व प्रेम को बिना हिचकिचाहट स्वीकार कर लेती हैं । उसमें भी पुरूष अविवाहित हो तो बात अलग होती है, किंतु ऐसे सम्बन्धों में अधिकतर पुरूष विवाहित ही नजर आते हैं । कुवाँरी लड़कियों का विवाहित पुरूषों के प्रति निहायत आकर्षित होना और उनसे बेझिझक सम्बन्ध बाँधना भी एक शोध का विषय है । 'सम्बन्ध' कहानी की श्यामला विवाहित डॉक्टर सर्जन से प्रेम करती है। वह विवाह करना नहीं चाहती । अतः वह स्वतंत्र रूप से जिन्दगी को भोगती है । 'पुनरावृत्ति' की मधुलिका विवाहित पुरूष चिरंतन से भरपूर प्रेम करती है । 'अकेली राह'

की गौरी, 'झूठा दर्पण' की अमृता, 'प्रसंग' की ममता, 'बिखरे तिनके : नया नीड़' की मणि, 'फिर बसंत आया' की छाया, 'मछलियाँ' की विजयलक्ष्मी (विजी), 'पूर्ति' की तारा, 'कोई नहीं' की नमिता आदि भी विवाहपूर्व प्रेम में विश्वास करती नजर आती हैं।

उषा जी की अधिकांश कहानियों में नारी स्वतंत्रता एवं पाश्चात्य रंग-ढंग से प्रभावित होकर नैतिक मूल्यों को भूलकर अपने नीजि सुखों के लिए हरदम भटकते रहते हैं। शायद उषा जी का हृदय स्त्री की स्वतंत्रता चाहता होगा या उन पात्रों के जरिए वे विदेशी सभ्यता का दर्शन कराना चाहती होंगी । उनकी कहानियों के पात्र अपने आप में असन्तुष्ट, निराश एवं सुखों की खोज में भटकते हुए दिखाई देते हैं । यथा - 'चाँद चलता रहा' की रोहिणी शर्मा, 'मोहबन्ध' की अचला और नीलू 'ट्रिप' की नायिका, 'स्वीकृति' की जपा, 'मछलियाँ' की विजी एवं मूकी, 'झूठा दर्पण' की अमृता एवं मीरा, 'सागर पार का संगीत' की देवयानी, 'चाँदनी में बर्फ पर' की मीरा, 'पुनरावृत्ति' की सुखमी, सैली, मधुलिका आदि इसके सशक्त उदाहरण हैं ।

उषा जी की कहानियों में भारतीय एवं विदेशी परिवेश का भरपूर चित्रण हुआ है । इसके साथ-साथ उसके पात्र भी भारतीय एवं विदेशी हैं । उषा जी के भारतीय होते हुए विदेशी पुरूष से विवाह करना स्वाभाविक है । अतः उनकी भावनाओं, कुण्ठाओं का दो संस्कृतियों के परिवेश में स्त्री-पुरूष के सम्बन्धों की कथाओं का बार-बार पुनरावर्तन हुआ है । भारतीय एवं विदेशी स्त्री-पुरूषों की सामाजिक गतिविधियों का रूप उनकी कहानियों में हमें देखने को मिलता है । विदेशी नारी भारतीय समाज में अनुकूल नहीं हो सकी है, किंतु भारतीय नारी की विदेशी समाज एवं संस्कृति में स्वयं को ढालने की सफल कोशिश शायद किसी ओर की नहीं बल्कि खुद उषा जी की भी हो सकती है ।

उषा जी ऐसी कथाकार है, जिन्होंन शिल्प योजना की दृष्टि से आकर्षकता दिखाई है । उनके उपन्यास एवं कहानियों की भाषा वैविध्य सभर है । प्रतीक, बिम्ब और अलंकारों के प्रयोग से भाषा में सहजता एवं कलात्मकता आयी है । परिवेश के अनुसार कहावतें, मुहावरें, अरबी-फारसी-उर्दू और अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग भी हुआ है । कहीं-कहीं अंग्रेजी वाक्यों से विदेशी वातावरण बन पड़ा है । पात्रानुकूल भाषा ने उनके कथा-साहित्य में रोचकता एवं यथार्थता भर दी है । नारीसंवेदना और अनुभव को रचनाओं में उतारने की क्षमता उनकी भाषा में है ।

उषा जी के कथा-साहित्य का महत्वपूर्ण शिल्प-आयाम वर्णनात्मक शैली है ।

संवेदना और अनुभूति को पूर्ण रूप से व्यक्त करने में वर्णनात्मक शैली का महत्वपूर्ण स्थान है । 'पचपन खम्भे लाल दीवारें','रूकोगी नहीं राधिका', 'शेष यात्रा', 'अंतर्वंशी' आदि उपन्यास एवं 'नई कोंपल', 'तूफान के बाद', 'पूर्ति', 'पिघलती हुई बर्फ', 'टूटे हुए' आदि कहानियों में वर्णनात्मक शैली का सफल प्रयोग हुआ है । 'रूकोगी नहीं राधिका' और 'भया कबीर उदास' आदि में मनोविश्लेषणात्मक शैली का प्रयोग हुआ है । उनके 'भया कबीर उदास' डायरी शैली में प्रस्तुत हुआ है । उषा जी ने अपने कथा-साहित्य में आवश्यकता पड़ने पर पत्रात्मक शैली, आत्मकथात्मक शैली एवं फ्लैशबैक शैली का भी प्रयोग किया है ।

उषा जी की नारी-संवेदना उन्हें अपनी समकालीन महिला लेखिकाओं में प्रमुख स्थान प्रदान करती है । सभी समकालीन लेखिकाओं ने अपने कथा-साहित्य में नारी-संवेदना के विविध रूपों को उभारा है, किन्तु उषाजी ने मात्र नारी-संवेदना के विविध रूपों का ही चित्रण नहीं किया, बल्कि नारी के निरन्तर विकसित होते व्यक्तित्व का यथार्थ चित्रण करते हुए स्वयं को साठोत्तर काल से लेकर इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक तक की एक सशक्त नारी-संवेदना की लेखिका के रूप में प्रतिष्ठित कर लिया है ।